

तीर्थकर वाणी ●

## पश्चिम के परिप्रेक्ष्य में भगवान् महावीर

डॉ० पारसमंल अग्रवाल

उपाचार्य, भौतिकी अध्ययन शाला

विक्रम विश्व विद्यालय, उज्जैन (म. प्र.)

इतिहास के सर्वाधिक प्रभावी व्यक्तियों की सूची में महावीर :

पिछले दशक में अमरीका में 572 पृष्ठों की एक पुस्तक प्रकाशित हुई जिसका शीर्षक है 'The 100 : A Ranking of the Most Influential Personia In History'। इस शीर्षक का हिन्दी भावानुवाद होगा- 'विशिष्ट सौ: इतिहास के सर्वाधिक प्रभावी व्यक्तियों की सूची'।

कला, विज्ञान, साहित्य, राजनीति, धर्म आदि विभिन्न विषयों से संबन्धित पूरे विश्व को सर्वाधिक प्रभावित करने वाले एक सौ ऐतिहासिक व्यक्तियों की सूची बनाने का प्रयास इस पुस्तक में हुआ है। इन सौ व्यक्तियों की सूची में भारत के तीन व्यक्तियों को स्थान मिला है उनमें एक स्थान अत्यन्त आदर के साथ अमरीकी लेखक माइकल हार्ट ने महावीर का स्वीकारा है।

माइकल हार्ट अपनी उक्त पुस्तक में श्री महावीर के जीवन का वर्णन करते हुए बताते हैं कि श्री महावीर द्वारा तीस वर्ष की उम्र में राजसी शारीरिक सुख के साधनों का त्याग कर पार्श्वनाथ की परंपरा में दीक्षित होना, तप-उपवास करना, एक वर्तन भी न रखना, तपस्या के विकसित चरण में एक भी वस्त्र न रखना, कीट-पतंगों-मच्छरों को भी नग्न शरीर से हटाने का प्रयास न करना, समाज के कई व्यक्तियों के व्यंग्य, अपमान, बाधा, उपर्सर्ग आदि से प्रभावित न होना, ज्ञान-ध्यान में इस प्रकार 12 वर्ष तक लीन रहना व ज्ञान प्राप्ति के बाद अहिंसा का उपदेश स्वयं अहिंसा का पालन करते हुए देना ये सब ऐसे कारण बने जिनसे लाखों-लाखों व्यक्ति महावीर से प्रभावित हुए थे व आज तक हो रहे हैं।

वर्तमान में प्रभाव

महावीर की आध्यात्मिक उपलब्धि के साथ २ भौतिक जगत की वर्तमान उपलब्धियों पर प्रभाव की चर्चा करते हुए माइकल हार्ट उक्त पुस्तक में यह स्वीकारते हैं कि महावीर के उपदेशों का प्रभाव आधुनिक युग में भी देखा जा सकता है। उदाहरण के रूप में माइकल हार्ट महात्मागांधी का उल्लेख करते हैं जिन्होंने जैन दार्शनिक श्रीमद् राजचन्द्र को आध्यात्मिक गुरु मानकर अहिंसा आदि

### महावीरजग्नी विशेषांक ●

सीखकर स्वयं के जीवन में एवं राष्ट्र के जीवन में महावीर के सिद्धान्त अपनाये थे। स्वयं महात्मागांधी ने अपनी आत्मकथा में यह स्वीकारा है कि अहिंसा एवं अध्यात्म का मर्म उन्होंने श्रीमद् राजचन्द्र से सीखा एवं जब २ उन्हें अहिंसा के बारे में कोई शंका उपस्थित होती वे राजचन्द्र से सम्पर्क करते थे।

लेखक माइकल हार्ट यह भी स्वीकारते हैं कि महावीर की शिक्षाओं में ही ऐसी विशेषताएं हैं जिनसे जैन समुदाय समृद्ध समाज है व जैनियों का बौद्धिक एवं कलात्मक योगदान भी जैन आवादी के अनुपात में बहुत अधिक है। ब्रिटेनिका एनसाइक्लोपीडिया में भी जैन समाज को समृद्ध समाज के रूप में स्वीकारा है। समृद्ध क्यों? कुछ बिन्दुओं पर चर्चा उपयोगी होगी।

### कुव्यसनों के त्याग की सुन्दर परंपरा

महावीर की परंपरा में जन्म लेने वाले बालक को बचपन से ही सात कुव्यसनों के त्याग के संस्कार मिलना बहुत बड़ी विरासत है। जुआ, मांस, मट्ठ, वेश्यागमन, शिकार, चोरी एवं परस्त्री रमण. ये सात कुव्यसन न होन पर समाज के समृद्ध होने में आशर्च्य क्या है?

### जीव स्वयं अपने भाग्य का विधाता :

दूसरी बात यह भी है कि महावीर के सिद्धान्त के अनुसार स्वयं का सुख-दुःख मनुष्य को स्वयं के कर्मों के अनुसार ही मिलता है। किसी महाशक्ति को प्रसन्न करके आलसी बने रहने की प्रेरणा भी महावीर के मार्ग में नहीं मिलती है।

### शाकाहार भोजन आज के युग की आवश्यकता

यद्यपि महावीर के समग्र सिद्धान्तों एवं दर्शन की तुलना में शाकाहार एक साधारणसी बात है किन्तु दुनिया की नजरों में महावीर के अनुयायियों के साथ शाकाहार भोजन विशेष रूप से जुड़ा हुआ है। कुछ वर्षों तक अमरीका में रहने से दुनिया के कई देशों के विद्वानों एवं सामान्य नागरिकों की जिज्ञासा एवं सोच जानने का अवसर लेखक को मिला है। अमरीका में कई व्यक्तियों ने जब यह जाना कि मैं महावीर में आस्था रखता हूं तो उन्होंने शाकाहार भोजन एवं नग्न दिगम्बर मुनिराज आदि के बारे में जिज्ञासाएं व्यक्त कीं। अमरीका में ही एक स्थान पर मुझे एक विशेष अनुभव यह भी हुआ कि जैसे ही मैंने आलू खाने से मना किया साथ वाले अमरीकन ने पूछा कि क्या आप जैन हैं?

शाकाहार भोजन की महत्ता वैज्ञानिक अनुसन्धान के साथ साथ उजागर होती जा रही है। कुछ वर्षों पूर्व ऐसा प्रचार होता था कि शाकाहारी भोजन अपूर्ण है। अप्टे एवं मांस के बड़े २ उद्योगों ने कई वर्षों तक यह प्रचार करवाया कि

### तीर्थकर वाणी ●

बलशाली होने के लिये इन वस्तुओं का सेवन आवश्यक है। प्रचार इतना हुआ कि कई महावीर के अनुयायियों को भी शाकाहार की श्रेष्ठता पर शंका होने लगी।

किन्तु सांच को आंच नहीं। बढ़ते हुए हृदयरोगों के कारणों का पता लगाते हुए पश्चिम जगत के वैज्ञानिकों ने पाया कि भोजन में कोलेस्टराल की अधिक मात्रा हानिकारक है। कोलेस्टराल की मात्रा आज के वैज्ञानिकों के अनुसार 300 मिलीग्राम प्रतिदिन या इससे भी कम एक सामान्य व्यक्ति के लिये है। दोनों समय एक एक गिलास (250 ग्राम) दूध व 40 ग्राम शुद्ध घी सहित शाकाहारी भोजन करने वालों के भोजन में कोलेस्टराल की मात्रा प्रतिदिन 250 मिलीग्राम से कम यानी वैज्ञानिकों द्वारा निर्धारित सीमा ही होती है। जबकि प्रतिदिन एक अण्डा व औसत स्तर का मांसाहारी भोजन करने वाला प्रतिदिन 500 मिलीग्राम से भी अधिक कोलेस्टराल अपने पेट में पहुंचा देता है जो कि निर्धारित सीमा में बहुत ज्यादा है। अतः हानिकारक है। (एक अण्डे में ही 275 मिलीग्राम कोलेस्टराल होता है जबकि एक अण्डे जितनी केलोरी प्रदान करने वाले 10 ग्राम शुद्ध घी में कोलेस्टराल की मात्रा तीस (30) मिलीग्राम ही होती है।) आवश्यक प्रोटीन की मात्रा भी शाकाहार में दूध, आटे व दाल के सेवन से उपलब्ध हो जाती है। इसी प्रकार के व अन्य कई आंकड़ों के आधार पर अमरीकन मेडिकल एशोसिएशन द्वारा लिखित पुस्तक (फेमिली मेडिकल गाइड) में स्पष्ट लिखा है कि कुल मिलाकर शाकाहारी भोजन मांसाहारी भोजन से अधिक श्रेष्ठ है।

### अमरीका में सिगरेटों की खपत में तेजी से कमी

महावीर का नशाविरोधी संदेश न केवल आध्यात्मिक विकास के लिये उपयोगी है अपितु आज पता चलता है कि स्वास्थ्य के लिये भी यह महत्वपूर्ण है। तंबाकू से केंसर व हृदयरोग बढ़ने के कारण अब ऐसे हजारों ऑफिस अमरीका में आज हैं जहां सिगरेट पीने की या तमाखू का सेवन करने की सख्त मनाई है। मजेदार वात यह है कि पन्द्रह वर्ष पहले ही ऐसे भवनों में धड़ल्ले से सिगरेट फूंकी जाती थीं व सिगरेट खरीदने के लिये दूर न जाना पड़े इस हेतु स्थान स्थान पर यहां तक कि कालेज के अन्दर भी सिगरेट बेचने वाली मशीनें होती थीं। आज तो अमरीका में कुछ घट्टों वाली हवाई जहाज की यात्रा में भी धूम्रपान की सख्त मनाई है।

सिगरेट से आगे शराब पर भी वैज्ञानिकों का ध्यान गया है। 1989 से अमरीकी सरकार ने यह कानून भी बना दिया है कि शराब की बोतल पर यह छापना अनिवार्य कर दिया है कि शराब गर्भवती महिलाओं के लिये हानिकारक है।

## महावीरजयन्ती विशेषांक ●

सारांश यह है कि एक-एक करके महावीर के संदेशों का मर्म आज विकसित देशों के वैज्ञानिकों एवं जनता को समझ में आता जा रहा है। भारत में कई व्यक्ति ऐसे हैं जिन्होंने अपने जीवन में कई अच्छी बातें परिकार की परंपरा के रूप में ग्रहण की हैं। किन्तु कई व्यक्ति वैज्ञानिक उपलब्धियों की चकाचाँध में यह मान बैठे हैं कि 50 वर्ष पूर्व अंग्रेज या अमरीकी जो करते थे या पुस्तकों में लिखते थे वही आदर्श हैं। ऐसे व्यक्तियों को थोड़ा यह सोचना उपयोगी हो सकता है कि आधुनिक वैज्ञानिक अनुसन्धान एवं आधुनिक जीवन की समस्याओं के आधार पर अंग्रेज या अमरीकी भी अब शाकाहार को मांसाहार की तुलना में अधिक श्रेष्ठ, नशे एवं मुक्त योनाचार को बुरा एवं परमात्मा में विश्वास को लाभप्रद मानने लगे हैं। एक जीता जागता प्रमाण यह भी इस क्रम में लिखना उचित होगा कि 1956 से अमरीका के प्रत्येक सिक्के एवं नोट पर 'In God We Trust' (परमात्मा में हम औस्था रखते हैं) लिखा जाने लगा है। प्रबल जन समर्थन के बिना इतना वजनदार वाक्य कोई भी प्रजातंत्र में चुनी जाने वाली सरकार सरकारी मुद्रा पर अंकित नहीं कर सकती है। अतः सिक्कों एवं नोटों पर इस वाक्य का अस्तित्व स्पष्ट रूप से यह दर्शाता है कि अमरीका परमात्मा में विश्वास करने लगा है।

### विचार

उक्त वर्णन के साथ-साथ यहां यह भी कहना उचित होगा कि ये सारी बातें तो महावीर के समग्र दर्शन का एक अत्यन्त छोटा भाग है। भोजन व रहन-सहन से भी अधिक वजनदार एवं महत्त्वपूर्ण बात है विचारों की शुद्धता। विचारों की अपवित्रता को भी भगवान महावीर ने भावहिंसा बताकर यह दर्शाया कि विचारों की अशुद्धि भी हिंसा है। आधुनिक मनोवैज्ञानिक एवं चिकित्सक भी प्रमाणों के आधार पर धीरे-धीरे यह मानने लगे हैं कि कई बीमारियां मनुष्य के अपवित्र विचारों से पैदा होती हैं व कई बीमारियों की चिकित्सा अपवित्र विचारों को सुधार लेने पर बहुत सरल हो जाती हैं। उदाहरण के रूप में डॉ० वीस (weirs) का यह कथन ले सकते हैं जिसमें वे समझाते हैं कि जिन व्यक्तियों को जोड़ें एवं मांसपेशियों में दर्द बना रहता है वे व्यक्ति अपने किसी नजदीकी व्यक्ति से लगातार घृणा व शिकायत का भाव रख रहे होते हैं। डॉ० नार्मन विन्सेण्ट पील ने अपनी विश्वप्रसिद्ध पुस्तक 'दि पावर ऑफ पाजिटिव थिंकिंग' में उक्त कथन को विस्तार से समझाया है।

आठ कर्मों की 148 प्रकृतियां, एवं उनके बंधन फल एवं उनके लिये

## तीर्थकर वाणी ●

जिमेदार विचारों की चर्चा भगवान महावीर के उपदेशों में विस्तार से हुई है। आज के युग में भी लुइ हे (Louir Hay) जैसे मनोवैज्ञानिक 'आप अपनी जिंदगी को चंगा कर सकते हैं' (You can Heal your Life) जैसी पुस्तक में यह बताते हैं कि कौन से विचारों से पोठ में दर्द होता है, कौनसे विचारों से पेट की बीमारी आती है, कौनसे विचार एक्सीडेन्ट को निमंत्रण देते हैं, कौनसे विचारों से अमीरी आती हैं..... इत्यादि २। ऐसी पुस्तकों की संख्या भविष्य में बढ़ने की संभावनाएं बहुत हैं। आठ कर्मों के बंधने का मर्म जिसने समझ लिया उसके लिये ऐसी पुस्तकों की आवश्यकता कितनी रह जाती है? जैसे असाता वेदनीय के कारणों को बताते हुए तत्वार्थसूत्र के ६ में आचार्य उमास्वामि बताते हैं कि-

दुःख-शोकतापाक्रन्दनवद्य परिदेवनान्यात्म परोभय स्थानान्यसद् वेद्यस्य ॥

(अपने में, दूसरे में या दोनों में विद्यमान दुःख, शोक, ताप, आक्रन्दन, वध और परिदेवन ये असातावेदनीय के कारण हैं)।

## आत्मा

खानपीन, रहन-सहन व विचारों के प्रभाव के बारे में इस वैज्ञानिक युग में जो कुछ भी अनुसंधान हुआ है उससे महावीर के उपदेशों की महत्ता बढ़ी है व बढ़ रही है। चिकित्सा विषय पर नोबुल पुरस्कार विजेता जार्ज वाल्ड (George wald) जैसे वैज्ञानिक यह भी मानने लगे हैं कि आत्मा भी पदार्थ है (उनके शब्दों में - 'That is the stuff of the universe')। इस गीत से बढ़ते हुए वह दिन भी दूर नहीं जब कई पश्चांगी दार्शनिक एवं वैज्ञानिक समयसार कलश के वाक्य-

'आत्मा ज्ञानं स्वयं ज्ञानं ज्ञानादन्यत्करोति किम्' का मर्म समझकर अपने जीवन में महावीरत्व पर श्रद्धा पा सकेंगे।